अंतरा-शब्दशक्ति

आनंद की सरिता

आलेख संग्रह

श्रीमति राजकुमारी चौकसे (प्रेरणा)

आनंद की सरिता

(आलेख संग्रह)

श्रीमति राजकुमारी चौकसे (प्रेरणा)

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-34-6

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय :१५ नेहरु चौक वारासिवनी४८१३३१ (प्र.म) जिला बालाघाट,

शाखा४५२००१ (.प्र.म) इंदौर ,इंदौर प्रेस क्लब परिसर ,नवीन भवन ,२०७-एस :

दूरभाष २५३१५९-०७६३३ (.कार्या) : ९४२४७६५२५९(मो)

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना -www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८©श्रीमति राजकुमारी चौकसे (प्रेरणा)

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Anand ki Sarita' by 'Smt. Rajkumari chuksey'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

अनुक्रमणिका

1. आनंदित जीवन का रहस्य 5

2. विश्वास 6

3. शांत चित्त मन 7

4. शक्ति-स्वरूपा 8

5. इच्छा शक्ति हो प्रबल 9

6. सकारात्मक सोच व हरा-भरा पर्यावरण 10

7. मातृ वंदना 12

8. कैसे महके जीवन? 14

9. घरवाली आखिर क्या करती है? 15

आनंदित जीवन का रहस्य

कहते हैं चार दिन की जिंदगी मिली हैं , इसे हंसते-खेलते मिल-जुल कर बिताओं। पता नहीं कब किसका बुलावा आ जाए और गाड़ी छोड़नी पडें। जैसे ट्रेन में सफर करते हैं , कई यात्राओं से मुलाकात होती हैं , ऐसे घुलमिल जाते हैं जैसे बहुत पुरानी पहचान हैं सब अपने ही लगने लगते हैं ,लेकिन जब जिसका स्टेशन आता हैं और वो अपना बोरिया-बिस्तर लिए अपने गंतव्य पर उतर जाता हैं। यात्री चढ़तें हैं उतरते हैं बस यही क्रम चलते रहता है। ठीक उसी तरह यह संसार हैं। यहाँ भी हम हमेशा कि लिए नही आऐ हैं। जब तक ईश्वर ने हमें यहॉ की डयूटी दी हैं कर्तव्य निभानें की तभी तक के लिये हैं। जब हमारी डयूटी खत्म हो जाएगी हमारा स्टेशन आ जाएगा , तब हमें यह संसार रूपी गाड़ी को छोड़ना पडेगा, क्योकि हमारा असली घर वो ही है जहाँ से हम आऐ हैं। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए , कि हमारे पिताओ के भी पिता, पिता का पिता परमपिता परमेश्वर हैं।

जिसकी हम संतान हैं इसलिये सुबह जब हम उठते हैं , तब हमारा कांसिस माइण्ड एक्टिव रहता हैं तब हमें प्रत्येक दिन अपने परमपिता की याद करना चाहिये अच्छे-अच्छे विचार मन में लाए, और मन ही मन अपने-आप से कहें मैं भगवान की संतान हूँ , मैं बहुत खुष हूँ , सुखी हूँ, शांत हूँ, पावरफुल हूँ। जैसा सोचते हैं वैसा ही होता हैं , तो सफलता आपके पीछे-पीछे चलेगी तब किसी के व्यवहार का अच्छा और बुरा कोई भी असर आपके हृदय को नहीं छुयेगा। जब आप अंदर से प्रसन्न रहेंगे तो सारा जहान आपको अच्छा लगेगा, यदि आप अन्दर मन से दुखी हो तो दुनिया का कोई भी सुख तुम्हें सुखी नहीं कर सकता, आंनदित नहीं कर सकता यही सुखी जीवन का रहस्य हैं।

विश्वास

कहते हैं विश्वास पर ही दुनिया टिकी हैं। यदि आप किसी के प्रति बिना जाने समझे ही पहले से ही कोई धारणा बना लेते हैं तो वो व्यक्ति आपको वैसा ही नजर आयेगा । इसलिए कभी भी किसी के प्रति गलत सोच आपके अन्दर नकारात्मकता पैदा करती हैं जो आपके लिए भी घातक है और दूसरों के प्रति भी घातक है। इसलिए हमेषा कोई भी कदम बिना सोचे- समझे नहीं उठाना चाहिए। आवेष में आ कर कभी-कभी हम कुछ ऐसा कर बैठते हैं। जो हमें जीवन भर के लिए पछताने के सिवा और कुछ नहीं दे सकता हैं। जिन्दगी में कई रिष्ते विश्वास पर ही टिके रहते है। समाज में रहकर हम हमेषा एक- दुसरे के सर्म्पक में रहें बिना नहीं रह सकतें।

माना कि आज समाज में विश्वास व आस्था की डोर कमजोर हो चुकी है। फिर भी थोड़ी आषा की किरण बाकी है। ये दुनिया सकारात्मक विचार धारा वाले व सत्यता और विष्वासी लोगो पर ही टिकी है। इसलिए कहते है, विश्वास से तो पत्थर में भी भगवान प्रकट हो जाते है।

फूलो में भी कांटे पाए जाते है। पत्थरों मे भी हीरे पाए जाते है। 'बुराई को छोड़कर अच्छाई देखिए तो सही नर में भी नारायण पाये जाते है।'

शांत चित्त मन

कहते हैं विचारों से मुक्ति ही असली शांति हैं। लेकिन हम कभी भी जब खाली बैठे होते हैं तब भी हमारा मन इधर-उधर डोलते या सक्रिय रहता हैं। हम शरीर से काम नहीं करते। लेकिन विचारों को अंदर ही अंदर भरते रहते हैं और मान लेते हैं कि हम खाली हैं। जब कभी भी हम शरीर से निष्क्रिय हो तो विचार करे कि हम मन से आखिरी बार कब शांत हुये थे **?** चौबीस घंटे में एक दो बार यह सवाल हम अपने मन से जरूर पूछें क्योंकि शांत मन मस्तिष्क को रचनात्मक परिणाम देने में सहयोग देता हैं। मस्तिष्क में विचारों को व्यवस्थित या क्रमबद्ध बनाने के लिए प्रेरित करता हैं। इसलिए मन जैसे ही शांत होता हैं। वैसे ही हमारी समझ सक्रिय हो जाएगी और विचारों को व्यवस्थित कर देगी। व्यवस्थित विचार निराशा। उदासी व चिड़चिड़ापन को पास नहीं आने देते। मन मौन हैं तब भी वह अतीत मे जाता हैं या फिर भविष्य में।

मन एक तरह से इन्द्रधनुष की तरह हैं। जैसे इन्द्रधनुष दिखता हैं पर होता नहीं है। यदि आप इन्द्रधनुष के निकट पहुँचेंगे तो कुछ नहीं मिलेगा। वह केवल आकाश का एक रूप हैं। ऐसे ही मन विचारों का रूप हैं। इससे मुक्त होना ही असली खाली होना हैं। चौबीस घंटे मे बाहर व भीतर से जो भी खाली रह सकेगा वही होगा शांत,व्यवस्थित,शांत चित्त मन। वस्तुतः मन वर्तमान मे जीता हैं ऐसे व्यक्तित्व कम होते हैं जो हमेशा ही वर्तमान का आंनद उठाएं। कभी भी पुरानी बातों को नहीं दोहरॉए न ही भविष्य की निरर्थक चिंता करे दरअसल मन और मस्तिष्क दोनो को शांत चित्त प्रेरित करता हैं।

आज शिक्षा का स्तर बहुत ऊचा उठ गया है और बच्चे मेहनत भी बहुत करते हैं।लेकिन यदि वह श्रम के साथ -साथ अपने आप को थोडा समय देने लगे तो बहुत अच्छा होगा। सुबह थोडे समय के लिए वे शांत चित्त मन से ध्यान का अभ्यास करें तो दुनिया की बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान सहज में ही हो जाएगा क्योंकि सारे दिन विज्ञान के वरदान का लाभ उठाते-उठाते प्राकृतिक संपदा का लाभ लेना भी बहुत जरूरी हो गया हैं। इसे नवयुवा भूलते जा रहें हैं। इस वजय से वे चिड़चिड़े भी बहुत होने लगे हैं। उनकी सहनशक्ति की क्षमता कम हो गई हैं। बात-बात पर गुस्सा आता हैं। इसलिए इस बात पर गौर किया जाए।

शक्ति-स्वरूपा

शक्ति शब्द कान में पडते ही आदि शक्ति माँ भगवती , जिसके एक नहीं अनेक नाम हैं। उनके एहसास की सुखानुभूति उनके नाम लेते ही होने लगती हैं। कोई उन्हें दुर्गा कहता है , कोई माँ काली, माँ लक्ष्मी व ज्ञान की देवी माँ सरस्वती ये सब एक ही शक्ति के अनेक रूप है। जब तीनों रूपो का समावेष एक मे हो जाता हैं , तब वह आदि शक्ति माँ भवानी दुर्गा कहलाती हैं ।

नारी भी स्वंय शाश्वत का स्वरूप है। वह मनुष्य जाति में ऊर्जा प्रवाह का प्रमुख माध्यम हैं , जिसके बिना संरक्षण ,पोषण ,रक्षा और आंनद की कल्पना नहीं की जा सकती । भारतीय दर्शनशास्त्र में देवी माँ दुर्गा के माध्यम से नारी शक्ति की महत्वता स्थापित की गई । स्वंय देवादि देव महादेव नें माँ शक्ति को स्वयं में धारण किया और अर्धनारीश्वर कहलाये। नारी शक्ति का अलौकिक प्रकाश तीनों लोक में फैल गया । नारी एक ऐसी शक्ति है जिसके बिना भविष्य की आशा ही नहीं की जा सकती और न ही कभी संपूर्ण पोषण को प्राप्त किया जा सकता हैं। बच्चों का भविष्य और आने वाले समाज का भविष्य नारी पर ही निर्भर हैं ।

नारी तो एक शाश्वत चिरंतन दिव्य रूप हैं जिसकी अनुभूति मात्र हो सकती हैं अभिव्यक्ति नहीं और वह अनुभूति हर उस व्यक्ति को होती है जो एक पुत्र, पति, पिता व भाई हैं । जो आत्मीयता के धरातल पर आदमी हैं नारी का महान पद माता का हैं।

घर को उज्जवल करने वाली और पवित्र आचरण करने वाली हमारी भारतीय नारीयां है , जो पूजा के योग्य हैं । वे घर की लक्ष्मी कही गई हैं अतः उनका विशेष रूप से आदर व सम्मान करें औंर उनकी रक्षा के लिए सदैव तैयार रहें। नारी के दायित्व अनगिनत हैं ,अमर राष्ट्रप्रेम में सरावोर एक ओजस्वी व्यक्तित्व जो आवश्यकता पडनें पर अपने संकुचित दायरे से बाहर निकलकर जनमानस को राष्ट्रीय चेतना से इंगित कर देती हैं वह नारी ही हें।

यत्र नर्यास्तु-पूज्यन्ते रमन्ते तत्रदेवता !
यत्रास्तु न पुण्यन्ते सर्वास्तुदाफला किया!

इस सुक्ति का सामान्य अर्थ यह है कि जहाँ नारी की प्रतिष्ठा और सम्मान होता है वहाँ देव शक्तियां विराजमान होती हैं और जहां नारी का निरादर होता है वहां नाना प्रकार के विघ्न उत्पन्न होते हैं। राष्ट्र कवि मैथिलीषरण गुप्त जी ने इस विषय मे स्पष्ट ही कहा हैं "एक नहीं दो-दो मात्राएं " नर से बढकर नारी और अब वो समय आ गया है कि हमें अपनी शक्ति को प्रदर्शित करने के लिए एक जुट होकर काम करना पडेगा और ये सावित करना होगा कि देवी माँ की विभक्त शक्ति जब एकत्रितं हो जाती है तो वह शक्ति स्वरूपा बन जाती हैं।

इच्छा शक्ति हो प्रबल

कहते है किसी भी कार्य को करने के लिए मन मे चाह है, तो राह तो अपने-आप निकल आती बस जरूरत है अपनी इच्छा शक्ति का होना। क्योकि हमारी सोच पर ही हमारी कार्य कुशलता निर्भर हैं। यदि हम असमंजस की स्थति बनाये रखेगें तो कभी भी अपनी मंजिल नहीं प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिये हमें अपनी सुबह की शुरूआत बहुत अच्छी करनी चाहिए । सुबह उठते ही बिस्तर पर ही मन ही मन अपने परमपिता ईश्वर को याद करे और उन्हें धन्यवाद दें ,कि है प्रभु आप अपनी कृपा दृष्टि हम पर बनाए रखे। मन मे हमेशा सभी के प्रति भले की भावना हो। मन ही मन ये सकंल्प करे कि मै अपने कार्य के प्रति बेहद सर्तक रहूंगा या रहूंगी। मुझे अपने कार्य मे पूर्णतः सफलता प्राप्त होगी । जैसा हम सोचते हैं ठीक बैसा ही हमारे साथ होता हैं। सही सोच ही हमारी सही दिशा और दशा तय करती हैं। सही सोच के लिए हमारा सुबह का किया हुआ ध्यान , प्राणायाम हमारे लिये संजीवनी बूटी का काम करता हैं व आपकी इच्छा शक्ति को भी प्रबल करेगा ।

सकारात्मक सोच व हरा-भरा पर्यावरण

कहते है कि जैसे हमारे विचार होते हैं वैसा ही परिणाम सामने आता हैं। इसलिये हमेशा सकारात्मक विचार ही मन में बैठाना चाहिए । यदि कोई बुरी बात मन में आती भी हैं तो उसी क्षण अपने विचारों पर रोक लगाए और अच्छा सोचें जीवन में कर्म बहुत जरूरी हैं और कर्म करने के लिए मन इच्छा का होना भी अति आवश्यक हैं। जैसा मन में सोचते हैं वैसा ही होता हैं। यदि हम संकल्प ले कि हम अपनी धरती माँ को हमेशा हरा-भरा रखेंगे , पेडो को कटने से बचायेगें पर्यावरण को सुरक्षित रखनें के लिए हम हरदम तैयार रहेंगे तो हमारा देश हरा-भरा बना रहेंगा व हमारी आने वाली पीडी को हम जीवन देने में कुछ हद तक हम काम आ सकेंगे, क्योंकि आने वाले समय में हमारी नई पीढी के लिए सांस लेना दुर्भर हो जाएगा , जिस तरह से आज पर्यावरण को नुकसान पहुचाया जा रहा हैं। ऐसी ही कुछ सकारात्मक सोच के साथ के साथ हमारी संस्था निर्सग भाव धारा संगठन पर्यावरण को ले कर सक्रिय हैं, जो दिन प्रति दिन उन्नति के षिखर पर हैं। और समूचे भारत वर्ष में अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए कार्यरत हैं। नई आशा और विश्वास के नव - उल्लास के साथ कदम दर कदम आगे बढ रहें हैं। इसी आशा के साथ कि आप भी अपना कदम हमारे साथ मिलाएं,

हम होगें कामयाब एक दिन

जीवन में जिस दिन हम अपने अंदर की बुराईयों को समाप्त कर उच्च विचारधारा तथा अपनी आत्मा को शुद्ध करके शुरूआत कर लें वही मानव धर्म का पालन हैं। हमारी हरी-भरी धरा को हमेशा हरा भरा रखने के लिए आज जो अंधाधुंध प्लास्टिक , डिस्पोजल से बढता कचरा जो हमारे पर्यावरण के लिए घातक, उसे रोकना होगा इसका बहिष्कार जरूरी हैं। जब धरती पर अत्याचार बढने लगता है और धरती माँ की पुकार सुन श्री राम का अवतरण पृथ्वी पर होता हैं संत शिरोमणी गोस्वामी तुलसीदास जी ने बडे ही सुंदर ढंग से इसे प्रस्तुत किया

अतिसय देखि धर्म के ग्लानि।।

परम सभीत धरा अकुलानी।।

गिरिसरि सिंध भारि नही मोहि।।

जस माहि गरूअं एक परदोही।।

आज फिर से वही स्थिति वही पीडा में हमारी धरती माता हैं , आज फिर से वही स्थिति, वही पीड़ा में हमारी धरती माता हैं। प्रदुषण रूपी जहर का कहर जारी हैं। धरती माँ की पुकार है , मुझे समुद्र, पहाड़, नदियों का बजन नहीं लगता पर मानवीय गतिविधियों से जो मेरे कलेजे में निरन्तर विष घुलता जा रहा हैं , उससे मैं बेहद आहत हूँ। इसलिए हमें मिलजुल कर कदम से कदम मिलाकर पानी , हरियाली, वृक्ष, मिट्टी का संरक्षण करें। आप अच्छा सोंचेगे ,तो कर्म भी अच्छा ही होगा और फल भी अच्छा ही प्राप्त होगा । वस्तुत; यह सम्पूर्ण ब्रह्नांड एक कल्पवृक्ष हैं। जो हमारी इच्छा और हमारे भाव के अनुरूप् हमारी सृष्टि का निर्माण करता हैं। सकारात्मक विचारों के द्रारा इसे सार्थक रूप दिया जा सकता हैं। हमारा मन लगातार विचार करते रहता हैं। इसे विचार करने से रोका नहीं जा सकता हैं , लेकिन विचारों की गति धीमी और सकारात्मक की जा सकती हैं। वर्तमान काल क्षणिक हैं, इसमें मन को स्थिर रखना ही 'मन का मौन' हैं। जब मन मौन रहेगा तो व्यर्थ के विचार मन में नहीं आयेगें , और हम सकारात्मकता की ओर बढ़ते चले जावेगें।

एक परिश्रमी माली की तरह जिदंगी के बाग से हमें भी व्यर्थक विचारों को उखाड़ फेके ताकि आवश्यक कार्यो के लिए समय और शक्ति बची रहें और हम अपने पर्यावरण को बचाने में कुछ हद तक सहयोग दे सके ।

मातृ वंदना

माँ शब्द कान में पडतें ही तन औंर मन आनंद से भर जाता हैं चाहे वह जन्म देने वाली माँ हो या जन्म भूमि (पृथ्वी माता) या फिर जगत जननी माँ स्वमं निमित सृष्टि मे प्रत्येक स्थान पर पहुँच पाना जब ईष्वर के लिए असंभव हो गया तब उसने माँ का सृजन किया । माँ एक ऐसी अनमोल संपदा है जिसका मुल्य आँकना भगवान के लिए भी असंभव हैं। फिर मनुष्य मात्र तो चीज ही क्या हैं। जब हमने धरती पर पहली सांस ली तब हमारे पास केवल हमारी माँ ही थी तब से लेकर अब तक भी और आगे जीवन में भी माँ की छत्र -छाया में ही सुरक्षित हैं । उनकी दी हुई षिक्षा-दीक्षा ही जीवन के हर पहलू में काम आती हैं । कहते भी हैं कि बच्चें की पहली गुरू माँ ही होती हैं गंगा की जल धारा घटती- बढती हैं लेकिन माँ की स्नेह धारा सदैव एक सी रहती हैं । काले मेघ लिए बदली बरसकर बिखर जाती है किन्तु माँ की वात्सल्य वर्षा अनवरत बरसती रहती हैं "माँ" की गोद ही विष्व में सबसे सुरक्षित स्थान है।

किसी ने क्या खूब कहा हैं...

रोम -रोम में भरा स्नेह
जिसका हर वचन हैं वरदान
विराजमान हैं वही हर गेह
'माँ'स्वरूप में है स्वयं भगवान

माँ अर्थात स्नेह के मोती की सीप माँ अर्थात मन्दिर का ज्वलन्त दीप, भगवान के भजन से माँ प्राप्त नहीं होती , किन्तु माँ की सेवा से भगवान जरूर मिल जाते हैं। अपनी माँ को घर में रूलाकर मन्दिर की माँ को चढावा चढाता हैं तो वह सपूत नहीं कपूत हैं। माँ का आशीर्वाद तो हर सन्तान को मिलता ही हैं किन्तु आज्ञाकारी सन्तानो को फलता-फूलता भी है। माँ और क्षमा दोनो एक है, क्षमा करने में दोनो नेक हैं ।

संसार में बहुत सारी चीजो की जोडियाँ मिल जाती हैं परन्तु केवल "माँ" ही "बेजोड़" है। उसकी बराबरी कही नहीं हैं। संसार की दो भीषण

करूणान्तिएँ "बिना माँ का घर और बिना घर के "माँ" बिना माँ का बच्चा मानो बिना कुन्डी का दरवाजा जिस माँ ने निज अंग गलाकर पिलाया अमृत और गाये गीत , थी क्या सुहानी छटा गहन गंभीर गर्जन करती मानों आषाढ की घनघोर मेघ घटा" ओ माँ तेरी लोरी की लय पर खुले मेरे अन्तद्वार और तेरी स्नेह व प्यार की महक से देखी मैने सुनहरी सुबह बार-बार सौ षिक्षको से भी बढकर एक माँ होती है। वरना सद्रगुण संस्कार हमे कौन देता बचपन मैं जिस बेटे को माता- पिता बोलना सिखाते है वे ही बेटे बडें हो कर उन्हें चुप रहने के लिये कहते हैं ,चाहे कोई आसमान से तारे गिन लें परन्तु माँ के उपकार को कोई कैसे गिन सकता हैं।माता जो लोरी झुले में सुनाती हैं वह जीवन के अन्तिम क्षणों तक साथ रहती हैं इसलिये बच्चों का कर्तव्य होता हैं कि बचपन मे जिसने गोद बिठाया उन्हें बुढापे मे दगा मत देना विश्व के खारे समुद्र मे माँ मीठे जल का स्त्रोत्र है माँ का प्यार ही शिशु के जीवन चन्द्र है शेष सब खघोत है। माँ की आँखो में दो बार आंसू आते है ,जब बेटी ससुराल जाए और एक तब जब उसका बेटा उससे मूँह फेर ले , तेरा आठ वर्ष का पुत्र तेरे प्रेम को तरसता है ,सोच तेरे अस्सी वर्ष के माँ- बाप तुझ से क्या चाहते होंगे ? अन्त में बस यही कहूँगी।

प्रथम प्रणाम मेरी माँ को समर्पित मान लिया जिसने मिट्टी को रत्न भूखी रहकर भोजन मुझे को किया अर्पित किया जतन मुझे देह का सयत्न !! वह तो बस माँ ही हैं !!

कैसे महके जीवन?

बच्चे भरपूर नींद लेते है और खुश भी बहुत रहते हैं। बड़ो की अपेक्षा इसका कारण क्या है? क्योंकि ये कोई तनाव नहीं पालते है , क्या उन्हें डॉट नहीं पड़ती माना कि बड़ो के ऊपर जिम्मेदारीयाँ बढ़ जाती है , रूपया पैसा कमाना गृहस्थी बच्चों की पढ़ाई की चिन्ता इन सब के लिये धन कमाना पर, आपको एक समय के बाद धन को लेकर तनाव बनाए रखना सारगर्भित नहीं है। आप और हम जानते है कि बच्चों का भी डांट पढ़ती हैं , उन्हें भी कुछ उम्मीद होती है उनके भी कुछ लक्ष्य होते है। परन्तु वो बड़ों से पहले ही पुरानी बातों को भुलकर नये की तैयारी में जुट जाते है। खिलखिला कर हंस देते है और पुराना भूलकर आगे की और कदम बढ़ाने में देर नहीं करतें। क्या उन्हें चोट नहीं लगती , गिरते पड़तें रहते है, जल्दी भूलकर उठ खड़े होते है, जितनी जल्दी गुस्सा होते है उतनी ही जल्दी मान भी जाते है। क्योंकि वो हर समय नये आयाम में जीते है। दोस्ती का हाथ भी उतनी ही जल्दी बढ़ाते है। कभी-कभी विचारने की कोशिश कीजिए कि बच्चों को बडे कितना बुरा बोल देते है , लेकिन यही शब्द बड़ो को बोल दिया जाए तो जिन्दगी भर की गांठ बांध लेते है। लेकिन बच्चे बांहे फैलाये दौड़कर बड़ों के गले लगने में देरी नहीं करतें इतनी जल्दी तो भगवान के फरिस्ते ही मानते है। और ये फ़रिश्ते है, कभी-कभी ये हमारे गुरू बन ज्ञान भी दे देते है। और हमारी जटिल जिन्दगी में कुछ लचीलापन लाने में हमारे मददगार बन सकते है। जरूरत है तो बस थोड़ा अपने आप को समय के साथ बदलने की । और दोस्तों के साथ जुड़ने की, कुछ समय अपने बड़ो के साथ व कुछ समय अपने से छोंटे फरिस्तों के साथ अवश्य बिताना चाहिए बड़ो से जिन्दगी का अनुभव प्राप्त होता है। व बच्चों से बचपन में ले जा कर जीवन बचपन की अठखेलियों में वापिस ले जाता है। और आप अपने आपको बेहद तरो ताजा महसुस कर सकतें है। तब आप भी नींद भर सो पाएगे और खुश भी रहे पाऐगे और आप का जीवन खुशियों से महेक उठेगा।

घरवाली आखिर क्या करती है?

ये एक किसी महिलाओं पर केन्द्रीत न हो कर हर उन महिलाओं की कहानी है, जो समाज में प्रश्न -चिन्ह सहा करती है। माना कि आज नारी घर और बाहर दोनों का दायित्व बखूबी निभा रही है , और अपने सशक्तिकरण का पूर्व परिचय देते हुये ये साबित कर दिया है कि वो भी पुरूष के बराबरी पर कदम से कदम बढ़ कर उनसे भी कहीं आगे आने के प्रयास मे कार्यरत है। ये हमारे समाज के लिये गौरव की बात है। किन्तु मैं उन महिलाओं को भी किसी रूप में कम नहीं समझती हूँ, जो घर पर रहकर अपने कर्तव्यों का पालन करती है। कभी-कभी ये प्रश्न लोगों के मस्तिष्क मे घुमने लगता है ; कि 'घर वाली अखिर क्या करती है'?

भारतीय संस्कृति के अनुसार **16** संस्कारो में एक विवाह संस्कार भी जीवन का बड़ा महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। विवाह बंधन में बंधने के बाद शरीर दो और आत्मा एक हो जाती है। दो आत्माओं का यह संगम ही जीवन की बगिया को हरा-भरा रखता हैं। नई-नई कॅलिया खिलती है,महकती है, और खुशबू चारों ओर फैल जाती है। जिससे वातावरण सुखद हो जाता है , लेकिन इन सब को पाने के लिए विवेक और बुद्धि रुपी दो पहिये की जरूरत होती है। जिसके सही इस्तेमाल के द्वारा ही गाड़ी पहिये से नीचे नहीं उतरती, यदि जरा सी भी लापरवाही हुई और घटना घटने मे देर नही लगती क्योंकि सबसे गहरा और नजदीकी रिश्ता पति-पत्नी का होता है पर उतना ही नाजुक भी। एक-दूसरे पर विश्वास का होना अति आवष्यक है। जीवन जितना भी पारदर्शी होगा उतना ही अच्छा आज पति -पत्नी दोनो ही बाहर कमाने जाते है ऐसे मे गृहस्थी को सुचारू रूप से चलाना अति आवश्यक ही नहीं अनिवार्य हो गया हैं।

वो **24** घंटे **7** दिनों परिवार की जी हजूरी में लगी रहती हैं घर का हर एक कार्य कब-कहाँ कैसे संपूर्ण हो जाता है इसकी जानकारी भी घर के अन्य सदस्य को नहीं होती। पर कभी-कभी उसको इन सभी क्रिया-कलापो पर

पानी फिरते नजर आता है तब जब कमाई पर प्रश्न खडा होता है । जो महिला अपना पूरा जीवन अपने परिवार पर न्यौछावर कर देती हे , उस माँ की कमाई अनमोल है उसका मुल्य चुकाने के लिए पूरी जिन्दगी भी कम पड जाती हैं। इसके बावजूद भी वह अपने क़र्तव्यो पर अडिंग रहते हुये घरवाली ही बनी रहती है।ऐसी महान-महान नारियाँ ही हमारी संस्कृति की पहचान है।

नारी भी स्वंय सशक्ति का स्वरूप है। वह मनुष्य जाति में ऊर्जा प्रवाह का प्रमुख माध्यम हैं , जिसके बिना संरक्षण, पोषण, रक्षा और आंनद की कल्पना नहीं की जा सकती । स्वंय देवादि देव महादेव, नें माँ शक्ति को स्वयं में धारण किया और अर्धनारीश्वर कहलाये । नारी शक्ति का अलौकिक प्रकाश तीनों लोक में फैल गया । नारी एक ऐसी शक्ति है जिसके बिना भविष्य की आशा ही नहीं की जा सकती और न ही कभी संपूर्ण पोषण को प्राप्त किया जा सकता हैं। बच्चों का भविष्य और आने वाले समाज का भविष्य नारी पर ही निर्भर हैं ।

नारी तो एक शाश्वत चिरन्तन दिव्य रूप हैं जिसकी अनुभूति मात्र हो सकती हैं अभिव्यक्ति नहीं और वह अनुभूति हर उस व्यक्ति को होती है जो एक पुत्र, पति, पिता व भाई हैं । जो आत्मीयता के धरातल पर आदमी हैं नारी का महान पद माता का हैं। घर को उज्जवल करने वाली और पवित्र आचरण करने वाली हमारी भारतीय नारीयां है, जो पूजा के योग्य हें । वे घर की लक्ष्मी कही गई हैं अतः उनका विशेष रूप से आदर व सम्मान करें औंर उनकी रक्षा के लिए सदैव तैयार रहें। नारी के दायित्व अनगिनत हैं , अमर राष्ट्रप्रेम में सरावोर एक ओजस्वी व्यक्तित्व जो आवश्यकता पडनें पर अपने संकुचित दायरे से बाहर निकलकर जनमानस को राष्ट्रीय चेंतना से इंगित कर देती हैं वह नारी ही हैं।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती राजकुमार चौकसे (प्रेरणा)

जन्म - 30.12.1963

पति - श्री सुरेश जी चौकसे

शिक्षा - बी.ए. (ग्रैजुएट)

पता - 128, कल्पना नगर, रायसेन रोड, भोपाल (म.प्र.)

संपर्क नं. - 9425012228, 6264542044

ई मेल - rajkumarihowksey30@gmail.com

ब्लॉग - पेज 'मन के विचार'

कार्यक्षेत्र - समाज सेविका, लेखिका (म.प्र. लेखिका संघ), गृहणी, सह-संचालक - सकारात्मक सोच संगठन, स्वच्छ भारत भोपाल, विश्व मैत्री मंच (म.प्र.) कला मंदिर सांस्कृतिक संस्था भोपाल, विश्व हिन्दी रचनाकार मंच हिन्दी प्रचार-प्रसार हिन्दी सागर संस्था, बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केन्द्र भोपाल

प्रकाशन - पुस्तक - 'संस्कार की विरासत' निर्दलीय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित भोपाल (दिल्ली) अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कव्य एवं लेख

सम्मान - राष्ट्रीय शिक्षा प्रसार अलंकरण निर्दलीय प्रकाशन द्वारा, कलचुरी वरिष्ठ नागरिक मंच द्वारा सम्मानित। अखिल भारतीय साहित्य परिषद भोपाल द्वारा सम्मानित ।

उद्देश्य - भारतीय संस्कृति से लगाव व प्रचार-प्रसार।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-34-6

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com